Index/अनुक्रमणिका

01. Index/ अनुक्रमणिका 01
02. Regional Editor Board / Editorial Advisory Board 07/08
03. Referee Board 09
04. Spokesperson 11

(Science / विज्ञान)

05. Need Of Sustainable Development To Combat The Impact Of Erratic Rainfall On Agriculture 13
(With Special Reference To District Ashoknagar, MP, India) (Dr. Renu Rajesh)
06. Ethnobotany: Some Wild Plant Used Of Fever By Tribals Of Dhar District, Madhya Pradesh 18
(Dr. Kamal Singh Alawa)
07. Study of Natural Vegetation in Girls College campus Khandwa (M.P.) (Dr. Kumud Dubey) 20
08. Impact Of Method Of Planting (RCT) On Growth And Yield Of Onion (*Allium Cepa L.*) Cv. 22
Bheema Kiran (Sanjay Kumar, Jitendra Singh, P.K. Rathi)
09. Nutrient Overloading And Its Consequences As Harmful Algal Blooms In A Tropical Lake 24
Of Central India (Pramod Patil, Dr. Bharti Khare)
10. Common Fixed Point Theorem for Two self mapping in fuzzy metric spaces (Dr. Sangeeta Biley)..... 32
11. Fixed Point Theorem On Three Complete Fuzzy Metric Spaces (Dr. Meenakshi Rawal) 35
12. Impact of Detergents on Environment in reference to Khandwa City (Dr. Avinash Dube)..... 38
13. Water Quality Index (WQI) - Determination Of Overall Quality Status Of Water Usable..... 40
For Different Purposes (Dr. Pramod Pandit)
14. Managing scarcity of Natural Resources- Through Ancient Ways (Dr. Laxmi Barelia) 43
15. Ecological Study Of Gharial Gavialisgangeticas (Dr. Sunita Shakle) 45

(Home Science / गृह विज्ञान)

16. Contemporary Use Of Kashidakari Embroidery (Jammu And Kashmir) Motif On 47
Khadi Kurtis With Hand Painting (Komal Sharma, Dr. Nidhi Vats)
17. Gender Difference In Interest With Special Reference To Music In Adolescent Students 53
Of Government Senior Secondary Schools Of Jaipur (Dr. Shiva Vyas)
18. Development Of Bags From Boutique Waste (Arti Chawla, Dr. Nidhi Vats) 58
19. प्रेषित उपभोक्ता संरक्षण हेतु उपभोक्ता शिक्षा (डॉ. कलिका डोलस)..... 62
20. कुपोषण मुक्त भारत - सुझाव (जयंती जोशी) 65

(Commerce & Management / वाणिज्य एवं प्रबंध)

21. An Economic Scenario Of Consumer Awareness Amongst Households - (A Statistically 67
Study With Special References Of Etah District In Uttar Pradesh) (Krishna Kant Dwivedi,
Rahul Sharma, Unnati Gupta)
22. Customer Satisfaction towards KFC Restaurant chain in Gwalior city - An Analytical Study 71
(Dr. Rajesh Jain)

110. पुस्तकालय एवम् सूचना विज्ञान की प्रस्तावना, पृष्ठभूमि, पुस्तकालयाध्यक्षों की महत्ता एवम् उपादेयता तथा 310
उनकी समस्याओं आदि का विश्लेषणात्मक अध्ययन (डॉ. विपिन बिहारी मिश्र)

111. ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों के अनुसार अन्नपूर्णा दूध योजना की प्रभावशीलता का अध्ययन 315
(डॉ. खेलशंकर व्यास, सत्यनारायण शर्मा)

112. पुस्तकालय एवम् सूचना विज्ञान के क्षेत्र में रसायन शास्त्र के शोध प्रबन्धों की शोध प्रविधि (जीवाजी 318
विश्वविद्यालय ग्वालियर एवम् देवी अहिल्याबाई विश्वविद्यालय, इन्दौर के विशेष सन्दर्भ में) (डॉ. विपिन बिहारी मिश्र)

113. पर्यावरण प्रदूषण - एक सामाजिक चुनौती (डॉ. स्वालकीन खान)..... 322

114. भारतीय लोक संगीत पर एक दृष्टि (मोनिका शर्मा)..... 325

115. आधुनिकता के परिवेश पर दूषित होता पर्यावरण (डॉ. सुनील बाबला, डॉ. सुरजीत सिंह करवाँ) 327

116. प्राकृतिक संसाधन एक सीमित श्रृंखला (डॉ. राजेश कुमार)..... 328

117. निमाड़ के बीसवीं सदी के सन्त श्री पुरुषोत्तम नागर (डॉ. मधुसूदन चौबे) 329

118. निमाड़ के सन्तों की चमत्कारपूर्ण गाथाएँ (डॉ. मधुसूदन चौबे) 331

119. कृषि फसल पर पर्यावरण का प्रभाव (उज्जैन जिले के विशेष संदर्भ में) (डॉ. मोहन निगोले)..... 334

120. English Language Teaching in India: New Challenges and Dimensions (Dr. Vandana Sharma) 336

121. The Buddhist Motif in the Waste Land (1922) (Arvind Kumar Srivastava) 339

122. प्राचीन नगरी मलहार के पुरासंपदाओं का ऐतिहासिक अनुशीलन (मंजू साहू, डॉ. रामरतन साहू) 343

123. विनोबा भावे का शिक्षा दर्शन (डॉ. सुनीता गुप्ता) 347

124. Study of Zooplanktons from Panvel creek, Panvel, Navi Mumbai, Dist. Raigad, ... 350
West Coast of India (Aamod N. Thakkar)

125. Radio and its Socio Economic Impact on Society (Dr. Nilesh Gangwal) 354

126. Women's Empowerment through the Entrepreneurship (Dr. Sanjay Bhavsar) 356

127. स्वामी विवेकानंद के शैक्षिक विचारों का व्यक्तित्व विकास पर प्रभाव (डॉ. योगेश चन्द्र जोशी) 359

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Impact Factor - 5.110 (2017) October To December 2018, Vol. I

प्राचीन नगरी मल्हार के पुरासंपदाओं का ऐतिहासिक अनुशीलन

मंजू साहू* डॉ. रामरतन साहू**

शोध सारांश – मल्हार नगर प्राचीन काल से छत्तीसगढ़ का एक ऐतिहासिक, धार्मिक व सांस्कृतिक गतिविधियों का प्रमुख केन्द्र रहा है। दक्षिण कोसल के नाम से जाना जाने वाला ऐतिहासिक स्थल मल्हार छत्तीसगढ़ के अंतर्गत बिलासपुर जिला के दक्षिण पूर्व में स्थित है। यह नगर प्राचीन सभ्यता, संस्कृति एवं कला की अमूल्य निधि अपने अंतराल में संजोये हुए है। मल्हार इतिहासकारों, पुरातत्वविदों, कलानुरागियों तथा पर्यटकों के आकर्षण का मुख्य केन्द्र रहा है। छत्तीसगढ़ के प्राचीन इतिहास के पुर्ननिर्माण में मल्हार के स्थापत्य कला का विशेष योगदान रहा है। छत्तीसगढ़ के राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास निर्माण तथा स्थापत्य कला में मल्हार क्षेत्र का उल्लेखनीय योगदान है। यहां से प्राप्त ताम्रपत्र, शिलालेख, मृणमुद्राएं, सिक्के, स्मारक एवं कलावषेषों के अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि यह नगर प्राचीन काल से ही समुन्नत रहा है। भारतीय इतिहास के निर्माण में पुरातत्वीय उपलब्धियों की उपादेयता सर्वमान्य तथ्य है, फलत: उस स्थान से पुरातात्विक वस्तुएं प्राप्त होती है एवं वहां इतिहास व संस्कृति के अध्येयताओं के लिए सहज आकर्षण के केन्द्र होते हैं। मल्हार एक ऐसा स्थल है जहां से प्राप्त पुरातन सामग्री का विभिन्न कालों से संबंध रहा है।

शब्द कुंजी – पुरातन, अनेकानेक, अध्येयता, विपुल, जीविकोपार्जन, पुरासंपदा।

प्रस्तावना –भारतीय इतिहास के विभिन्न ऐसे प्राचीन स्थल है जो राजनीतिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है। भारतीय इतिहास का अतीत उन आद्य ऐतिहासिक सम्पदाओं का विपुल भंडार रहा है, जिसके परिणाम स्वरूप हमारी प्राचीन संस्कृति ऐतिहासिक महत्व की सामाग्रियां, जन जीवन से संबंधित अनेकोनेक वस्तुओं का भंडार उसकी गहराई तक भरा पडा है, इसी श्रृंखला में छत्तीसगढ अंचल का अधिकांश भाग आता है।[1] पुरातात्विक सम्पदाओं एवं प्राचीन संस्कृति इतिहास में बेजोड़ रहा है, यदि हम इसे भारतीय इतिहास की श्रृंखला में सर्वप्रथम कहें तो अतिश्योक्ति नहीं होगी इस क्षेत्र की धरती पर अनेकानेक प्राचीन संस्कृति एवं इतिहास को उजागर करने वाला स्थान देखने को मिलता है, जिसमें मल्हार नगर का नाम पुरातात्विक महत्व के लिए प्रसिद्ध रहा है। बिलासपुर जिले का यह प्राचीन ऐतिहासिक नगर, सदियों पुरानी मूर्तिकला, चित्रकला, शिल्पकला, पुराने सिक्के, मनके, ठिकरे, ताम्रपत्रों के माध्यम से प्राचीन काल की गाथाओं को अपनी चिर स्थली भूमि के गर्भ में संयोजे समाधिस्थ योगी के समान बैठा हुआ है, जिसके परिणाम स्वरूप आज भी हमारी प्राचीन संस्कृति, सामाजिक, नैतिक, धार्मिक, आध्यात्मिक विषयों पर निरतंर प्रभाव डाल रहे हैं।

शिवनाथ, अरपा, लीलागर आदि नदियों के मध्य स्थित मल्हार नगर प्राचीन काल से छत्तीसगढ़ का एक धर्मिक व सांस्कृतिक गतिविधियों का प्रमुख केन्द्र रहा है। दक्षिण कोसल के नाम से जाना जाने वाला ऐतिहासिक स्थल मल्हार छत्तीसगढ़ के अंतर्गत बिलासपुर जिला के दक्षिण पूर्व में स्थित है। यह नगर प्राचीन सभ्यता, संस्कृति एवं कला की अमूल्य निधि अपने अंतराल में संजोये हुए है।[2] मल्हार इतिहासकारों, पुरातत्वविदों, कलानुरागियों तथा पर्यटकों के आकर्षण का मुख्य केन्द्र रहा है। यह स्थान जिला मुख्यालय से लगभग 32 किलो मीटर की दूरी पर स्थित है। छत्तीसगढ़ के प्राचीन इतिहास के पुर्ननिर्माण में मल्हार के स्थापत्य कला का विशेष योगदान रहा है।

छत्तीसगढ़ के राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास निर्माण तथा स्थापत्य कला में मल्हार क्षेत्र का उल्लेखनीय योगदान है। यहां से प्राप्त ताम्रपत्र, शिलालेख, मृणमुद्राएं, सिक्के, स्मारक एवं कलावशेशों के अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि यह नगर प्राचीन काल से ही समुन्नत रहा है। भारतीय इतिहास के निर्माण में पुरातत्वीय उपलब्धियों की उपादेयता सर्वमान्य तथ्य है, फलत: उस स्थान से पुरातात्विक वस्तुएं प्राप्त होती है एवं वहां इतिहास व संस्कृति के अध्येयताओं के लिए सहज आकर्षण के केन्द्र होते हैं। मल्हार भी एक ऐसा ही स्थल है जहां से प्राप्त पुरातन सामग्री का विभिन्न कालों से संबंध रहा है। यहां से प्राप्त महाराज महेन्द्र की पकी मिट्टी की मुद्रा व उत्खनन से पहली बार प्रकाश में आयी है।

प्राचीनकाल में मल्हार प्रमुख व्यापारिक केन्द्र स्थल था, इसी कारण से विभिन्न धर्मावलंबियों ने अपने-अपने धर्मों के उत्थान के लिए यहां मंदिरों एवं मूर्तियों का निर्माण कराया। वैष्णव धर्म के अतिरिक्त इस क्षेत्र से शैव मंदिरों तथा प्रतिमाओं का निर्माण विशेष रूप से किया है। मल्हार में वैष्णव, शैव धर्म के साथ ही साथ जैन व बौद्ध धर्म का भी पुरावशेष देखने को मिलता है।[3] पांचवी ई. से सातवीं सदी के मध्य निर्मित शिव कार्तिकेय की मूर्ति, गणेश की मूर्ति, स्कंदमाता की मूर्ति, अर्धनारीश्वर की मूर्तियां विशेष रूप से उल्लेखनीय है। गुप्तकालीन मंदिरों में साज सज्जा के अतिरिक्त मनोरंजक लोक कथाओं का भी अंकन हुआ है। सातवीं से दसवीं सदी के मध्य में विकसित यहां की मूर्ति कला में गुप्त कला का प्रभाव स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। मल्हार में बौद्ध स्मारकों तथा प्रतिमाओं का निर्माण इस काल की विशेषता है। बुद्ध, बोधितत्व तारा, हेवज, मंजु श्री आदि बौद्ध देवी देवताओं की प्रतिमाएं प्राप्त हुई है। जैन तीर्थ, यक्ष यक्षियों विशेषत: अंबिका की प्रतिमाएं यहां से मिली है।

मल्हार के स्थापत्य कला के जीवंत उदाहरण हैं – यहां स्थित प्रमुख मंदिर जैसे – पातालेश्वर केदार मंदिर, डिडिनेश्वरी मंदिर, देउर मंदिर, नंद

*शोधार्थी, डॉ. सी.वी. रामन् विश्वविद्यालय, करगीरोड, कोटा, बिलासपुर (छ.ग.) भारत
** सह प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष (इतिहास) डॉ. सी.वी. रामन् विश्वविद्यालय, करगीरोड, कोटा, बिलासपुर (छ.ग.) भारत

महल, परगनिहा देव मंदिर, स्कंद माता की मूर्ति, अभिलिखित चतुर्भुजी विष्णु प्रतिमा, शैव प्रतिमाएं इत्यादि। इस स्थल से संग्रहालय तथा ग्राम के अन्य समीपवर्ती क्षेत्रों में पाषाण फलकों पर अन्य रोचक तथा कलात्मक चित्रण देखने को मिलते हैं, जो तत्कालीन शिल्पकारों के द्वारा सुरूचिपूर्ण कलात्मक प्रदर्शन है, शवों एवं उनकी कला वैशिष्ट्य को प्रदर्शित करते हैं।

ईसा पूर्व दूसरी सदी की चतुर्भुजी विष्णु की प्रतिमा दक्षिण कौशल क्षेत्र में नहीं अपितु भरत के उन पाषाण प्रतिमाओं में से एक है जो कि इस अंचल की प्राचीनता एवं ऐतिहासिकता को मुखरित कर रहा है, मूर्ति स्थानिक मुद्रा में दिखलाया गया है, सिर में मुकुट, कानों में कुण्डल, गले में हार, सौम्य भव तथा हाथो में चक्र, दण्ड तथा कृपाण लिए हुए है, कमर में प्राचीन ताड़ वृक्ष के पत्ते के समान वस्त्र धारण किए हुए है, विद्वानों के मतानुसार यह पाषाण प्रतिमा भारत में निर्मित भागवान विष्णु की सर्वप्रथम प्रतिमा है, जो कि भारतीय पुरातत्व के मल्हार स्थित संग्रहालय में सुरक्षित है, समीप ही स्कंद माता की प्रतिमा भी रखी हुई है, प्रतिमा अत्यंत प्राचीन है, मूर्ति में स्कंद माता को कार्तिकेय जी को गोद में लिए प्रदर्शित किया गया है, यह मूर्ति साल वृक्ष के नीचे खड़ी है तथा प्रत्येक अंगो पर अलंकरण धारण की हुई है, मल्हार की प्राचीन मूर्ति कला की बहुल्यता को देखने से यह प्रतीत होता है कि यह नगर पाषाण मूर्तियों का स्थल रहा होगा। प्राचीन नगर का विस्तार लगभग दस किलोमीटर का रहा है, जिसके प्रत्येक जगहों में प्राचीन प्रस्तर मूर्तियां दबी हुई भरी पड़ी है, खुदाई के दौरान यह बात सामने आयी कि यहां सभी सम्प्रदायों की मूर्तियां प्रायः देखने को मिलती है जिसमें यह प्रतीत होता है कि यह प्राचीन नगर कला क्षेत्र के साथ ही सभी सम्प्रदायों के धर्मो का भी केन्द्र रहा है, यहां से प्राप्त मूर्तियों में जैन मूर्ति, बौद्धिक मूर्ति, शैव मूर्तियां, बहुत मात्रा में मिलती है, ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी से लेकर दसवीं, ग्यारहवीं बारहवीं एवं तेरहवीं शताब्दीं तक की मूर्तियां जिसमें भगवान विष्णुजी की प्रतिमा, गणेश जी की प्रतिमा, नृत्यरत उमा महेश्वर की प्रतिमा, पातालेश्वर शिवजी की प्रतिमा, मां डिड्नेिश्वरी जी की प्रतिमा, भगवान बुद्ध की प्रतिमा, जैन तीर्थंकरों की प्रतिमा आदि की अनेको मूर्तियां विभिन्न मुद्रा व भाव भंगिमा लिए हुए उपलब्ध है।[4] कला की दृष्टि से यह नगर सर्वाधिक महत्वपूर्ण रहा है, यहां से प्राप्त मूर्तियों के विषय में ऐसा अनुमान है कि इन मूर्तियों की शिल्पकला गुप्तकालीन तथा कलचुरी कालीन कला से संबंधित है, यहां की मुर्तियों में मां डिड्नेिश्वरी की प्रतिमा सर्वाधिक कीमती व महत्वपूर्ण है, पातालेश्वर मंदिर के प्रवेश द्वार पर भगवान गणेश को प्रणय लीला करते तथा भगवान शिव को उमा जी के साथ प्रदर्शित किया गया है, देउर मंदिर के अंदर एवं बाह्य भाग पर जड़ित साल भंजिका का अनुपम प्रतिमा दर्शनीय है, जिसका छायांकन शासन के कलेण्डर में युवकों के सहयोग से किया गया है।

इस स्थल से न जाने कितनी दुर्लभ वस्तुओं की प्राप्ति हुई है, यहां बहुमूल्य सिक्कों के साथ ही शिलालेख, ताम्रपत्रों के सेट, पक्की मिट्टी की महत्वपूर्ण सीले, बौद्ध मंत्र से उल्लेखित मुहरें भी प्राप्त हुए है, पहले और तीसरे ताम्रपत्र पर दोनों तरफ 5 वीं व 6 वीं शताब्दी में प्रचलित ब्राम्ही लिपि में बाक्स शीर्ष से युक्त संस्कृत में आलेख दिए गए हैं, लेख से प्राप्त विवरणों से विदित होता है कि सोमवंशी राजा हर्षदेव के परम महेश्वर पुत्र महाशिवगुप्त बालार्जुन ने द्रवदी शेग में स्थित ग्राम सिरलिका का दान पातालेश्वर मंदिर की व्यवस्था के लिए किया था। इसी क्रम में यहां से करीब 12 सेट ताम्रपत्र प्राप्त हो चुके है, यहां से प्राप्त राजा महेन्द्र की सील विशेष महत्वपूर्ण है जिसके द्वारा यह प्रमाणिक हो चुका है कि राजा महेन्द्र समुद्र गुप्त के समकालीन हैं, मल्हार ईसा पूर्व से लेकर ईसा के बाद 1300 शताब्दी तक एक प्रसिद्ध नगर रहा है, मल्हार इस अवधि में सोमवंशी शरभपुरिया कलचुरी तथा सातवाहन राजाओं की प्रमुख स्थल के रूप में प्रख्यात रहा है।[5] मल्हार में गंगा, यमुना, द्वारपालक शिव भगवान, विष्णु – लक्ष्मी की आकर्षण मूर्ति भी दर्शनीय है, मल्हार पातालेश्वर मंदिर प्रांगण पर ईसवीं पूर्व की पाचवीं शताब्दी से लेकर ग्यारहवीं, बारहवी शताब्दी तक की सैकड़ों दुर्लभ प्रतिमाएं संग्रहालय के बाह्य भाग पर संग्रहित है, जो कि पुरातत्ववेताओं के प्रयास तथा मल्हार के पुरातत्व प्रेमियों के सहयोग से संभव हुआ है।

मल्हार का प्राचीन किला जो कि सातवाहन काल के हैं, यहां से सात वाहन नरेश के सिक्के प्राप्त हुए है इसके पूर्व भी यहां से विपुल मात्रा में सोने, तांबे तथा कापर के सिक्के प्राप्त हुए है जिन्हें पुरातत्व विभाग को भेजा जा चुका है सिक्कों के संबंध में मल्हार बहुत महत्वपूर्ण स्थान रखता है, यहां से ही सातवाहन नरेश अपीलक का दूसरी शताब्दी का लिखित महत्वपूर्ण सिक्का प्राप्त हुआ है, इसके पूर्व इसी राजा का एक और सिक्का महानदी के रेत में प्रख्यात विद्वान पंडित लोचन प्रसाद पाडेय को प्राप्त हुआ था, इन सिक्कों के अलावा मल्हार से ही दो और महत्वपूर्ण सिक्के प्राप्त हुए हैं, जो सातवाहन राजाओं से ही संबंधित है, जिसमें पृष्ठ भाग में हाथी का अंकन स्पष्ट है, और कौशल लिखा है तथा दूसरा सिक्का सातवाहन वंशीय सतकर्णिय का गंजाकित सिक्का है।[6]

कल्पुरी राजाओं में राजा मोरध्वज का उल्लेख भी आता है, विभिन्न विद्वानों एवं शोधकर्ताओं के द्वारा यह भी निष्कर्ष निकाला गया है कि रामायण के आदर्श पात्र श्री राम ने अपने चौदह बरस के वनवास के दौरान कुछ समय बिलासपुर जिले के इस पुरातात्विक नगर में व्यतीत किए थे। इस समय श्री राम के साथ लक्ष्मण तथा माता सीता भी साथ में थी, वनवास के समय इन्होंने मल्हार के पंचसरा अर्थात परमेश्वरा तालाब के निकट व्यतीत किए, यह संदर्भ वाल्मिकी रामायण में भी है, इस प्रकार से मल्हार की प्राचीन इतिहास के साथ ही वेद पुराणों में भी वर्णित है जो कि वंदनीय तथा अभिनंदनीय है।

मल्हार नगरी को सिर्फ पुरातत्व सम्पदा के कारण याद किया जाता है, परंतु हम यहां कि मंदिर मूर्तियों से होते हुए अंदर की तरफ जायें तो प्रसिद्ध प्राचीन परमेश्वरा तालाब तक पंहुचने पर इतिहास के उन परतों पर पहुंच जाते हैं, जहां कलचुरी कालीन सभ्यता तथा संस्कृति ने भी कभी करवट ली थी, यू तो यह नगरी छत्तीसगढ़ के प्राचीन इतिहास में अहम स्थान रखती है लेकिन आज उपेक्षा के कारण अपनी दुर्गति पर आंसू बहा रही है, मल्हार में 126 अर्थात छः आगर छः कोरी तालाब है जो अपनी पौराणिक महत्व लिए हुए है, अधिकांश जलाशयों का नामकरण भी भागवान व ऋषिमुनियों पर आधारित है, जैसे राम सागर, लक्ष्मण सागर, शिव सागर, मोती सागर, शिव कुण्ड, हनुमान डबरी, ऋषि कुण्ड,गौरी कुण्ड, भरही डीपरा, पुरेना मोंगरा, घोरातान, थेम्हा जोगिया, गरबोरवा, डोंगिया गलियारा, चन्हा कपूरताल, बेल डबरी, नईया डबरी, खईया डबरी, मारकण्डेय कुण्ड, पंच ऋषिकुण्ड, बरकुआं, बरबांधा आदि प्रमुख है यहां के तालाबों में ज्यादातर शिवमंदिरो का आकर्षण दिखलायी पड़ता है, खईयां तालाब के निकट प्राचीनगढ़ किला है, यह किला राजमहल का खण्डहर है जो अभी भी बरकरार है, कहा जाता है कि राजा ने अपनी सुरक्षा के लिए प्राचीन खईया तालाब का निर्माण कराया था। ग्रामीण जन इसे अन्य नामों से भी पुकारते हैं। राजा जाजल्यदेव की पत्नि ने मोती सागर तालाब का निर्माण करवाया था ,जो कि स्वीमिंग पुल के आकार में बना है, इसके दक्षिण भाग पर 35 मीटर ऊंचा शिव मंदिर है

जिसे केउर मंदिर के नाम से भी जाना जाता है। परमेश्वरा तालाब में कभी जल को जीवन माना गया था, इस नगर के हर कोने कोने में बड़े-बड़े तालाब है तथा इसके किनारे मंदिर स्थित है, मंदिर में उत्कृष्ट मूर्तियां जीवन में आस्था के गीत गाती थी।

मल्हार के आस पास के क्षेत्र की परिधि में बुढ़ीखार तथा जयपुर ग्रामों के मध्य लगभग पांच किलोमीटर की लम्बाई तथा तीन किलोमीटर की चौड़ाई में ऊंचे टीले के रूप में दिखायी देता है। वर्तमान समय में इन टीलों को समतल कर कृषि कार्य के लिए उपयोग में लाया जाता है, इसमें हल चलाया जाता है तथा फसल उगाया जाता है। स्थानीय लोग इसे भर्री कहकर पुकारते हैं, यहां के भू-भाग में हल चलाते वक्त अथवा खुदाई करते समय पुरातात्विक महत्व के अवशेष, मृदभांड, सिक्के, मनके तथा कलात्मक प्रस्तर खंड, मंदिर द्वार, स्तंभ आदि प्राप्त होता है। इस क्षेत्र की एक प्रमुख विशेषता यह है कि यहां लगभग 50 मीटर के फासले पर अनेक छोटे छोटे कूप बने हुए मिलते है, जिसे पत्थरों से बांधकर बनाया गया है। इस क्षेत्र में आज भी कई जगहों पर कुआं प्राप्त होता रहता है, इन कूपों का उपयोग सिंचाई के लिए किया जाता है। पूर्व में इस क्षेत्र के बहुसंख्यक पत्थर तथा पकी हुई ईंटों का प्रयोग निजी भवनों के निर्माण में प्रयुक्त किया जाता रहा है। प्रारंभ में इन अवशेषों की प्राचीनता तथा उनके ऐतिहासिक महत्व की ओर किसी के ध्यान नहीं किया।[1] यहां के प्राचीन भवनों के नीचे के पत्थर तथा पकी हुई ईंटों को निकाल कर निजी मकान बनाने अथवा इसके बहुमूल्य सामान को बेचकर जीविकोपार्जन का क्रम चलता रहा, जो अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण कहा जा सकता है।

प्राचीन भवनों के अवशेषों, कलात्मक प्रस्तरखंड आदि मल्हार ग्राम की प्राचीनता, कला एवं संस्कृति के प्रतीक हैं तथा यहां के अतीत की गौरवगाथा को जन-जन तक पहुंचाने में समर्थ हैं। कालांतर में सबसे पहले पंडित लोचन प्रसाद पाण्डेय, पंडित प्यारे लाल गुप्त तथा श्री रेवाराम जैसे कतिपय पुरातत्व विद्वानों और पुरातत्व प्रेमियों ने इस अंचल की शिल्प कला, मूर्ति कला, ताम्र पत्रों, सिक्कों तथा अभिलेख आदि के महत्व को प्रदर्शित करते हुए मल्हार वासियों को आगाह कर जागृत किया। मल्हार के समस्त नागरिकों ने जनमत तैयार कर पुरातन संपदा के संरक्षण का कार्य अपने हाथें में लिया तथा मल्हार संग्रहालय की स्थापना में अपना सहयोग प्रदान कर देश के पुरातत्व वेत्ताओं, कलामर्मज्ञों एवं पर्यटकों का ध्यान यहां के पुरातत्व वैभव की ओर केन्द्रित किया प्रारंभ में अनेकों पर्यटक एवं पुरातत्व विभाग के अधिकारी, विद्वानों ने समय - समय पर इस क्षेत्र का भ्रमण कर इस क्षेत्र का एवं यहां से प्राप्त अनेक धर्म के देवी-देवताओं की प्रतिमाओं, कलात्मक मंदिरों तथा अन्य उपलब्ध पुरातात्विक महत्व के अवशेषों, ताम्रपत्रों, शिलालेखों सिक्कों आदि का अध्ययन कर, अन्य उपलब्ध पुरातात्विक महत्व के अवशेषों, ताम्रपत्रों, शिलालेखों, सिक्कों आदि का अध्ययन तथा प्रकाशन किया, जिससे समाचार पत्रों तथा अन्य प्रकाशनों के माध्यम से मल्हार की ख्याति, सुदूर अंचलों तक पहुंच सकी। मल्हार नगरी अन्य कई प्रकार के विशेषताओं के लिए विख्यात है, इनमें से इस स्थल के प्रमुख मंदिर निर्माण कला इस प्रकार हैं - कल्चुरी काल के अनेक शिलालेख एवं ताम्रपत्र यहां से मिले हैं, इससे ज्ञात होता है कि जाजल्लदेव द्वितीय के राज्यकाल में कल्चुरी सन् 1167 ई. में गंगाधर ब्राम्हण मंत्री के पुत्र सोमराज द्वारा केदारेश्वर मंदिर का निर्माण कराया गया है।

मल्हार नगरी अन्य कई प्रकार के विशेषताओं के लिए विख्यात है, इनमें से इस स्थल के प्रमुख मंदिर निर्माण कला इस प्रकार हैं - कल्चुरी काल के अनेक शिलालेख एवं ताम्रपत्र यहां से मिले हैं, इससे ज्ञात होता है कि जाजल्लदेव द्वितीय के राज्यकाल में कल्चुरी सन् 1167 ई. में 8 गंगाधर ब्राम्हण मंत्री के पुत्र सोमराज द्वारा केदारेश्वर मंदिर का निर्माण कराया गया है। इस नगर के पूर्व दिशा में माता डिडिनेश्वरी जी का मंदिर है, जिसे स्थानीय जन 'डिडिनदाई' के नाम से जानते हैं। जनश्रुति के अनुसार माता का यह मंदिर कल्चुरी राजाओं की कुलदेवी कही जाती थी, माता डिडिनदाई अपने अराध्य शिव जी की अराधना में तपस्यारत है।

मल्हार के विश्रामगृह एवं स्थानीय बस स्टैंड के समीप केन्द्रीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग द्वारा संरक्षित केउर मंदिर स्थित है। यह मंदिर टीले के रूप में परिवर्तित हो चुका था। भारतीय पुरातत्व विभाग के स्थानीय अधिकारियों द्वारा यहां सफाई करने का कार्य सन् 1979 से 1982 ई. तक किया गया। टीले की सफाई करते समय मंदिर का मूल आकार स्पष्ट हो गया, इसके साथ ही साथ मंदिर के निचले भाग में दबी हुई दुर्लभ कलाकृतियां एवं अलंकृत स्तंभ खण्ड भी मिले हैं। यहां से मिले अवशेषों से स्पष्ट होता है कि यह पश्चिमाभिमुखी शिव जी का मंदिर रहा है।[2] मंदिर का निर्माण बडे-बडे पत्थरों को तराश कर किया गया है। इस मंदिर के धरातल समानान्तर एवं आयताकार है। मंदिर के चारों ओर की भित्तियों में कीर्तिमुख, चैत्यवाक्ष, शरवाहक, पुष्पीय एवं ज्यामितीय आकृतियां, मकर अलंकरण तथा देवियों की आकृतियां उकेरी गयी है।

प्रमुख मूर्तियां अथवा प्रतिमाएं -

वैष्णव प्रतिमाएं- मल्हार में वैष्णव धर्म से संबंधित विभिन्न मूर्तियां प्राप्त हुए हैं, जिसमें दूसरी सदी का विष्णु मूर्ति प्रमुख है। इसके अतिरिक्त यहां चर्तुभुजी विष्णु, शेषशायी विष्णु, गरूड़ासीन विष्णु, लक्ष्मीनारायण, वेणु गोपाल, नृसिंह एवं गरूड़ की प्रतिमाएं भी प्राप्त हुए है।

शैव प्रतिमाएं - यहां शैव धर्म से संबंधित अनेक प्रतिमाएं प्राप्त हुए हैं, जिनमें अर्धनारीश्वर, शिव, चतुर्भुजीशिव, दसभुजी रौद्ररूपी नटराज, शिव-पार्वती, उमा-महेश्वर, नंदी पर सवारी किए हुए शिव, शिव जी की खंडित प्रतिमा एवं अन्य प्रतिमाएं हैं।

देवी प्रतिमाएं - इस स्थान से लक्ष्मी देवी, पार्वती देवी, वैष्णवी देवी, सरस्वती देवी, दुर्गा माता, महिषासुरमर्दिनी, अष्टभुजी चामुण्डा, यक्षिणी प्रतिमा, गंगा यमुना की प्रतिमाएं इत्यादि मिले हैं।

जैन प्रतिमाएं - मल्हार की सीमा से लगे ग्राम बूढ़ीखार क्षेत्र से जैन धर्म से संबंधित जिन-प्रतिमाओं का संग्रह है। इसी स्थान पर जैनतीर्थंकरों की आसनस्थ एवं कायोत्सर्ग मुद्रा में कतिपय प्रतिमाओं का सुन्दर संग्रह है। इसके अतिरिक्त मल्हार ग्राम के कतिपय भवनों, पीपलचौरा, नंदमहल में जैन प्रतिमाओं का संग्रह है।

जैन धर्म से संबंधित निम्न प्रतिमाएं मल्हार से भी प्राप्त हुए हैं, ये प्रतिमाएं हैं - सुपार्श्वनाथ, ऋषभनाथ, संभवनाथ की प्रतिमाएं इत्यादि।

बौद्ध प्रतिमाएं - ईसा सातवीं से दसवीं सदी के मध्य मल्हार एवं उसके आसपास के भू-भाग में बौद्ध स्मारकों तथा प्रतिमाओं का निर्माण हुआ। इस काल की मुख्य बौद्ध प्रतिमाओं में हेवज, बुद्ध, बोधिसत्व, मंजुश्री, एवं तारा इत्यादि हैं, इनमें बौद्ध देवी देवताओं की प्रतिमा अंकित है। मल्हार में खुदाई के दौरान प्राप्त बौद्ध देवता 'हेवज' की मूर्ति पकी हुई, ईंटों से बना है। इसमें हेवज देवता की मूर्ति एक चबुतरे पर स्थापित की गई है। यहां से एक व्रजयान मिला है, जो छठवीं सदी का है व यहां तांत्रिक बौद्ध धर्म व्रजयान का विकास भरपूर मात्रा में हुआ है। इसका स्पष्ट प्रमाण खुदाई से मिले बौद्ध चैत्य एवं विहारों से मिला है। यहां से प्राप्त बौद्ध प्रतिमाएं हैं -बोधिसत्व की

मूर्ति ,हेवज की प्रतिमा, ध्यानी बुद्ध की प्रतिमा, भूमिस्पर्श की मुद्रा में बुद्ध की प्रतिमा, बौद्ध जन्म से संबंधित फलक, पद्मपाणि अवलोकितेश्वर की मूर्ति, तारा की प्रतिमा इत्यादि।

उपसंहार – इस प्रकार से हम कह सकते हैं कि ऐतिहासिकता से परिपूर्ण मल्हार स्थल की पुरासंपदा व पुरालेख अति प्राचीन है। दक्षिण कोशल के राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास के निर्माण में इस क्षेत्र के उल्लेखनीय योगदान रहा है, ऐतिहासिक नगरी मल्हार धार्मिक सहिष्णुता, ऐतिहासिक महत्ता, पुरातत्व भग्नावशे, यहां से प्राप्त सीलें तथा सिक्के, शिलालेख एवं ताम्रपत्र, मिट्टी से बने टेरा-कोटा, संग्रहालय तथा उसमें स्थित प्रमुख प्रतिमाएं, मल्हार उत्खनन, यहां स्थित सैकडों तालाब, यहां की धार्मिक एवं आर्थिक दशा, इस स्थल में शैव, वैष्णव, जैन तथा बौद्ध धर्मों का संगम, आदि सभी अविस्मरणीय है। पूर्व में इस क्षेत्र के बहुसंख्यक पत्थर तथा पकी हुई ईटों का प्रयोग निजी भवनों को बनाने के लिए प्रयोग किया जाता रहा है। पूर्व में इन अवशेषों की प्राचीनता तथा उनके ऐतिहासिक महत्व की ओर किसी ने ध्यान नहीं दिया। यहां के प्राचीन भवनों के पत्थर तथा पकी हुई ईटों को निकाल कर निजी मकान बनाने अथवा इसके कीमती सामान को बेचकर जीविकोपार्जन का क्रम चल रहा है, जो अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण कहा जा सकता है। यहां की पुरासंपदा को सहेज कर तथा संभाल कर रखने की आवश्यकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. गुप्त , प्यारेलाल – प्राचीन छत्तीसगढ़ , पृ . 47।
2. मिराशी, वा. वि, वाकाटक राजवंश का इतिहास तथा अभिलेख , पृ. 129–289।
3. शर्मा, डॉ. सुधीर – छ.ग. का सांस्कृतिक पूरा वैभव पृ. 74–75।
4. वर्मा, डॉ. भगवान सिंह – पूर्वोक्त पृ. 24।
5. परिहार, दिनेश नंदनी, प्राचीन छत्तीसगढ़ का सामाजिक आर्थिक इतिहास , पृ. 25।
6. पाण्डेय, रघुनंदन प्रसाद , मल्हार दर्शन पृ.38।
7. मिश्रा, बलदेव प्रसाद , छत्तीसगढ़ परिचय , पृ. 104।
8. शर्मा, पालेश्वर प्रसाद, व शेष ,गोपाल, डिडिनेश्वरी देवी महिमा, मल्हार, पृ. 25।
9. बेहार, राजकुमार – छत्तीसगढ़ का इतिहास पृ. 13।

****